साहित्योत्सव
9-14 मार्च 2015
साहित्य अकादेमी
दैनिक समाचार बुलेटिन
शुक्रवार, 13 मार्च 2015

आज के कार्यक्रम

भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र
विषयक संगोष्ठी
पूर्वाह्न 10:00 बजे
साहित्य अकादेमी
सभागार
प्रथम तल

पूर्वोत्तरी
उत्तर पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय
लेखक सम्मिलन
रवींद्र भवन परिसर
पूर्वाह्न 10.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम
बूंदू खान लंगा एवं अनवर ख़ान
मांगणियार द्वारा
राजस्थानी लोक गायन
मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला
सायं 6.30 बजे

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र

साहित्योत्सव 2015 के चौथे दिन 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक किरण नागरकर ने किया और बीज भाषण नीरा चंडोक ने दिया। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने सभी विद्वानों का स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि यह संगोष्ठी विशेष रूप से भारतीय भाषाओं में क्षेत्रीय उपन्यासों के उभार से जुड़ी हुई है। पचास के दशक में सभी भारतीय भाषाओं के लेखन में तेज़ी आई और हिन्दी में इसे 'आंचलिक' की संज्ञा दी गई। ये कृतियाँ हालाँकि एक क्षेत्र विशेष तक केन्द्रित थी, लेकिन इसने राष्ट्र के मानस को प्रभावित किया। उन्होंने प्रेमचंद के 'गोदान' का उदाहरण देते हुए कहा कि यद्यपि यह बनारस की पृष्ठभूमि पर है, लेकिन यह देशभर के किसानों की स्थिति का आईना है। उन्होंने अंतरालों को पाटने में लेखकीय दृष्टि की आवश्यकता पर बल दिया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में किरण नागरकर ने देश के भीतर भाषाओं के संघर्ष पर अपने को केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि वे स्वयं दो भाषाओं में लिखते रहे हैं और उनसे प्रायः पूछा जाता है कि वे मराठी से अंग्रेज़ी की तरफ़ क्यों गए?और मुझे लगता है कि इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न में यह प्रश्न भी छुपा है कि उन्होंने मराठी में लिखना क्यों बंद किया। उन्होंने बताया कि उनके जीवन में वह एक प्रस्थान बिन्दु था, जब वे सेंट जेवियर्स कॉलेज, बंबई से फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे गए। जब

वे स्कूल में थे, मराठी और दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं को कमतर माना जाता था और विद्यार्थी उसे अगली कक्षा में जाने का साधन मात्र समझते थे, लेकिन दिलीप चित्रे से मिलने और 'अभिरुचि' पत्रिका के संपर्क में आने पर वे अपनी पहली कहानी और पहला उपन्यास लिखने को प्रेरित हुए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भाषाओं को संरक्षित करने की ज़रूरत है, क्योंकि किसी भाषा का लुप्त होना एक समूची जीवन पद्धति, अनुभूति और विचार का लुप्त होना है।

अपने बीज भाषण में नीरा चंडोक ने दक्षिण एशियाई संदर्भ में राष्ट्र-राज्य होने के विभिन्न विरोधाभासों की चर्चा की। उन्होंने राष्ट्रों के उदय को उपनिवेशवाद, संस्थागत अन्याय और अत्यधिक विभेद अथवा एक समूह के ख़िलाफ़ एक निश्चित समूह की अस्मिता को परिभाषित करने की आवश्यकता जैसे गंभीर उकसावे की प्रतिक्रिया माना। उन्होंने कहा कि अपने रक्तरंजित इतिहास की परीक्षाओं के माध्यम से राष्ट्र-राज्य के जन्म के साथ दक्षिण एशिया को अभी भी इसके सबक़ लेने हैं। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के मध्य समानताएँ देखने और साथ आने की आवश्यकता पर बल दिया।

संगोष्ठी का पहला सत्र 'उत्तर भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषय पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक गोपीचंद नारंग ने की। सत्र में तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों—फ़ारूक़ फ़याज़, नंद भारद्वाज, और राधा वल्लभ त्रिपाठी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनके विषय थे—'कश्मीरी कथा साहित्य में राष्ट्र और क्षेत्र', 'कथा-सृजन में क्षेत्र और राष्ट्र का प्रतिबिम्ब' तथा 'आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य में राष्ट्र क्षेत्र और अस्मिताएँ'।

द्वितीय सत्र 'भारतीय अंग्रेज़ी कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता आलोक भल्ला ने की और तीन प्रतिभागियों—कविता शर्मा, इश्तिा चंदा और सचिन केतकर ने क्रमशः 'महाभारत की राजनीति', 'हम आपके हैं कौन?: भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में न क्षेत्र न राष्ट्र' तथा 'अंधकार को प्रकाश में अनूदित करते हुए : व्हाइट टाइगर का एक सांस्कृतिक संकेतात्मक पाठ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अतीत के गलियारे से

मूर्तिकला के इस प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य है, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, इसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है। भारत में लेखन कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित यह अभिलेख नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ईस्वी का है।

साहित्य अकादेमी के प्रथम सचिव श्री कृष्ण कृपलानी ने अकादेमी की 'भारतीय साहित्य निर्माता' शृंखला के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों के अस्तर पर इसे मुद्रित करने की शुरुआत की, जिसे बाद में सभी पुस्तकों के लिए उपयोग में लाया जाने लगा।

स्थापना दिवस व्याख्यान

अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय भारतीय भाषाओं के लिए बड़ा ख़तरा

–एस.एल. भैरप्पा

आज सायं 6.00 बजे लब्धप्रतिष्ठ कन्नड लेखक एस.एल. भैरप्पा ने स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए कहा कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लगभग सभी लेखक भारत की खोज को लेकर चिंतित थे और उन्होंने विवेकानंद, श्रीअरविंद, तिलक और गाँधी के माध्यम से मातृभूमि को समझने का प्रयत्न किया; लेकिन स्वातंत्र्योत्तर दौर के लेखक एक बिल्कुल अलग बौद्धिक परिवेश में साँसें ले रहे हैं। यद्यपि नेहरू ने दावा किया था कि वे गाँधी जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी हैं, लेकिन वे गाँधीवादी दर्शन, गाँधीवादी अर्थशास्त्र अथवा ग्राम समाज में विश्वास नहीं रखते थे। उनका विश्वास केंद्रीकृत योजनाओं, बड़े उद्योगों और राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था में था। गाँधी जी का ईश्वर और धर्म में विश्वास उनके लिए किसी काम का नहीं था।

भैरप्पा ने अपने व्याख्यान में नेहरू युग के बाद श्रीमती इंदिरा गाँधी के दौर की आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि चाहे जो भी सरकार रही हो उसने ग़ैर-सरकारी उद्यमों, दाग़दार उद्योगपतियों और व्यवसायियों को प्रोत्साहित किया है। उन्होंने लेखकों से प्रश्न किया कि इस नई स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्होंने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जापानी शिक्षाविद् इस बात को लेकर चिंतित रहे कि पश्चिमी जीवन पद्धति, ख़ासकर अमरीकी जीवनशैली के प्रभाव से किस तरह पारंपरिक मूल्यों को बचाया जाए। आज हम भारत में इसी तरह की समस्या का सामना कर रहे हैं। भारतीय जीवन पद्धति को जिस तरह आर्थिक उदारीकरण के माध्यम से पश्चिमी जीवन शैली दरकिनार कर रही है, वह हमारे राष्ट्र के लिए और हम रचनाकारों के लिए भी बड़ी चुनौती है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के आरंभ में अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से लगभग सभी भारतीय भाषाएँ पश्चिमी साहित्य के संपर्क में आईं। उपन्यास, कहानी और कविता की विधाओं में एक ताज़गी दिखी। पश्चिमी साहित्य से प्रभावित भारतीय लेखकों ने इन नई विधाओं में अपनी भारतीय जड़ों की तलाश शुरू की। यह तलाश हमारे स्वतंत्रता संग्राम का एक अंग बनी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद हमारे बहुत से लेखकों ने पश्चिमी विषयवस्तु और शैलियों को अपनाना शुरू किया।

डॉ. भैरप्पा ने बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले अधिकांश राज्यों में हाई स्कूल तक संस्कृत पढ़ाई जाती थी। स्वतंत्रता मिलने के बाद केंद्रीय सरकार के द्वारा बहुत से परिवर्तन और सुधार किए गए, जिसके कारण संस्कृत का उतना महत्त्व नहीं रहा। स्थिति यह है या तो विद्यालयों के विद्यार्थी विषय के रूप में संस्कृत नहीं लेते या अधिकांश विद्यालयों में संस्कृत का अध्यापक नहीं होता। जिस समय तक विद्यार्थी युवा होता है और सर्जनात्मक साहित्य में उसकी रुचि विकसित होती है, तब तक अमरकोश और कारकों के साथ संस्कृत सीखना प्रारंभ करना उसने संभव नहीं रह जाता। साहित्यिक लेखकों को प्रारंभिक स्तर पर संस्कृत ज्ञान की आवश्यकता इसलिए होती है कि वे अपनी अभिव्यक्ति को गहराई, तीक्ष्णता और संक्षिप्ति प्रदान कर सकें।

उनका कहना था कि भारतीय भाषाओं पर दूसरा बड़ा खतरा और विनाशकारी प्रभाव अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों का प्रसार रहा है। कन्नड की स्थिति यह है कि कर्नाटक के प्रत्येक शहर और क़स्बे के माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में भेजना चाहते हैं, क्योंकि उनका सपना है इन स्कूलों में पढ़कर उनके बच्चे डॉक्टर या इंजीनियर बनेंगे। शिक्षाविद् इस बात को कहते रहे हैं कि किसी बच्चे के मानसिक और संवेदनात्मक विकास के लिए मातृभाषा अथवा उस परिवेश की भाषा सबसे ज़्यादा समीचीन होती है और उस पर किसी विदेशी या अनजानी भाषा को थोपना उसकी विचार शक्ति और अनुभव शक्ति की हत्या करना है। स्थिति यह है कि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा न पढ़ सकते हैं, न लिख सकते हैं। अपनी मातृभाषा की कविताओं में उनकी कोई रुचि नहीं होती और वे हमारे देश की मातृभाषा में उपलब्ध समृद्ध साहित्य से अनजान बने रहते हैं। इसके अतिरिक्त वे लोक साहित्य के ख़ज़ाने से अपरिचित रहते हैं। यदि किसी बच्चे में सर्जनात्मक लेखन की प्रतिभा है भी तो वह अपनी मातृभाषा में अपने को अभिव्यक्त नहीं कर सकता और परिणाम यह होता है कि वह अंग्रेज़ी में लेखन शुरू करता है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि ऐसी स्थिति दूसरी भाषाओं में भी है और इसका सामना करने के लिए एक सम्मिलित प्रयास की ज़रूरत है।

परिसंवाद

भारत की अलिखित भाषाएँ

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव के चौथे दिन 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भारत जैसे बड़े देश में जहाँ आज भी बहुत-सी भाषाएँ अपने पूरे विकसित विमर्शों में होते हुए भी; कहीं लिपि के आधार पर तो कहीं राजनैतिक आधार पर, प्रकाश में नहीं आ सकी हैं, अकादेमी भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद की शुरुआत करके एक नई नींव डाल रही है। प्रो. तिवारी ने कहा कि वैसे तो पहले सभी भाषाएँ अलिखित ही होती हैं, बाद में लिपि विकसित होती है। लिपि का होना महत्त्वपूर्ण तो है, किंतु केवल लिपि के होने से कोई भाषा महत्त्वपूर्ण नहीं हो जाती।

सुश्री अन्विता अब्बी ने कहा कि भारत में आज कुल 1576 बोली जाने वाली भाषाएँ हैं, जो बहुत से परिवर्तनों के बावजूद अपनी गरिमा और उपस्थिति बनाए हुए हैं। यहाँ अलिखित भाषाएँ लिखित भाषाओं से कहीं ज़्यादा हैं और यह आश्चर्यजनक है कि वे अपने अर्थों को वैज्ञानिक तथा तकनीकी के माध्यम से संप्रेषित करने में पूरी तरह सक्षम भी हैं। प्रो. उदयनारायण सिंह ने लिपि और भाषा के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर अपने को केंद्रित करते हुए कहा कि छोटे बच्चे बोलने से पहले ही चित्र बनाने की ओर आकर्षित होते हैं। दरअसल वह अपने स्तर पर लिपि और भाषा का विकास कर रहे होते हैं।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र का शुभारंभ प्रो. आयशा किदवई ने किया। उन्होंने अलिखित भाषाओं की तमाम बारीकियों को श्रोताओं के समक्ष रखते हुए तथा उसका विश्लेषण करते हुए कहा कि प्रारंभिक स्तर पर बोली जा रही ज़्यादातर जनजातीय भाषाएँ अपने एक ख़ास टोन के कारण संप्रेषण कर पाती हैं, किंतु वे एक ऐसे गद्य के रूप में बोली जाती हैं, जिनमें कोई खड़ी पाई अथवा अल्पविराम जैसा बोध नहीं होता। उमारानी पप्पूस्वामी ने उत्तर-पूर्व में बोली जानेवाली भाषाओं के बारे में कहा कि यहाँ ऐसी कई भाषाएँ हैं, जिनका ब्यौरा तक भारत सरकार के पास नहीं है। बहुत-सी अति-प्राचीन भाषाएँ, जिनकी अपनी वैज्ञानिक लिपि थी, किसी भी प्रकार का प्रश्रय न मिलने के कारण धीरे-धीरे इंटरनेट के माध्यम से रोमन लिपि में लिखी जाने लगी हैं। उदाहरण के लिए 'गारो', 'दिमासा' जैसी भाषाएँ जो पहले बांग्ला लिपि में लिखी जाती थीं, अब रोमन में लिखी जाने लगी हैं। कविता रस्तोगी ने कुमायूँ में बोली जाने वाली राजी भाषा पर अपना शोध आलेख पढ़ा। सत्र में अवधेश कुमार मिश्र, बी.एन. पटनायक, वी.आर.के. रेड्डी, महेन्द्र मिश्र, इम्तियाज़ हसनैन और फ़ारूक़ मीर ने आलेख पढ़े।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकोदमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा आज का दिन हमारे लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आज साहित्य अकादेमी का स्थापना दिवस है।

आगामी कार्यक्रम

14 मार्च 2015

'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक **राष्ट्रीय संगोष्ठी**
साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल : पूर्वाह्न 10.00 बजे

बाल साहिती : आओ कहानी बुनें : बाल साहित्य से संबंधित दिन भर का कार्यक्रम,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली-110001, दूरभाषः 011-23386626-28

DD NATIONAL
Media Partner

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रति दिन पूर्वाह्न 10 से सायं 7.00 बजे तक
रवींद्र भवन परिसर

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
दूरभाष : +91 11 23386626-28, फ़ैक्स : +91 11 23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in, वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in